

---

shrI subrahmaNyagadyaM

श्रीसुब्रह्मण्यगद्यम्

Document Information

---

Text title : shrI subrahmaNyagadyaM

File name : subragadya.itx

Category : gadyam, subrahmanya, stotra

Location : doc\_subrahmanya

Transliterated by : Antaratma antaratma at Safe-mail.net

Proofread by : Antaratma antaratma at Safe-mail.net

Latest update : October 7, 2005

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीसुब्रह्मण्यगद्यम्




पुरडरनन्दन रिपुकुलभञ्जन, दिनकरकोटि रुप  
परिहृतलोकताप, शिकीन्द्रवाहन मडेन्द्रपालन  
विधृतसकलभुवनमूल विधुतनिभिलदनुजतूल  
तापससमाराधित पापजविकाराजित,  
कारुण्यसलिलपूराधार मयूरवरवाहन मडेन्द्रगिरिकेतन,  
भक्तिपरगम्य, शक्तिकरगम्य, परिपालितनाड,  
पुरशासनपाड,, निभिललोकनायक,  
गिरिविदारिसायक, मडादेवभागधेय,  
विनतशोकनिवारण, विविधलोककारण, सुरवैरिकाल  
पुरवैरिभाल, भवभन्धनविमोचन,  
दण्डंभुजविलोचन, करुणामृतसरसागर,  
तरुणामृतकरशेभर, वल्लीमानडारवेष  
मल्लीमालभारिकेश, परिपालितविभुधलोक,  
परिकालितविनतशोक, भुभविजितचन्द्र,  
निभिलगुणामन्दिर, भानुकोटिसदृशरुप  
वितृमनोडारिमन्दडास, रिपुशिरोदारियन्द्रडास,  
श्रुतिकवितमण्डिकुण्डलरुचिविजित रविमण्डल,  
भुजवरविजितसाल भजनपरमनुजपाल, न  
ववीरसंसेवित रणधीर संभावितमनोहरशील  
मडेन्द्रारिकील, कुसुमविशदडास कलशिभरनिवास,  
विजितकरणमुनिसेवित विगतभरणजनिभाषित,  
स्कन्दपुरनिवास नन्दनकृतविलास, कमलासनविनत  
यतुरागमविनुत, कलिमलविडीन कृतसेवन  
सरसिजनिडाशशुभलोचन, अडार्यानरधीर  
अनार्यानरदूर, विदग्धित रोगजाल, विरचितभोगमूल

भोगीन्द्रभासित योगीन्द्रभावित, पाकशासनपरिपूजित  
नाकवासिनिकरसेवित, विद्रुतविद्याधर,  
विद्रुमहृद्याधर, दणितदनुजयेतएड,  
विभुधवरदकोदएडपरिपालितभूसुर,  
मणिभूषणभासुर, अतिरम्यस्वभाव,  
श्रुतिगम्यप्रभाव, लीलाविशेषतोषितशङ्कर,  
सुमसमरदन शशधरवदन विजयीभव! विजयीभव!


॥ इति सुब्रह्मण्यगद्यं संपूर्णम् ॥

Encoded and proofread by  
Antaratma antaratma at Safe-mail.net

---

——  
*shrI subrahmaNyagadyaM*

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

